Ykksd e`.e; ewfrZf'kYiksa dk dykRed v/;;u
¼lanHkZ % lkaLÑfr dsUnz laxzgky;] ubZ fnYyh½

n;kyckx ,tqds'kuy bULVhV~;wV ¼MhEM ;wfuoflZVh½ n;kyckx vkxjk ls
fp=dyk esa ih&,p-Mh- ds vUrxZr çLrqr 'kks/k çcU/k dh :ijs[kk

'kks/k funsZf'kdk — 'kks/k Nk=k

Mk- ehuk{kh Bkdqj — uhye dqekjh

असिस्टेण्ट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग

कला संकाय

fp=dyk foHkkx] dyk ladk;
n;kyckx ,tqds'kuy bULVhV~;wV ¼MhEM ;wfuoflZVh½
n;kyckx] vkxjk& 282005

2020

'kks/kladYiuk

कला मानवीय अन्तर्मन की अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम है। मानवीय अभिव्यक्ति की यह परम्परा आदिकाल से ही अपना अद्वितीय स्थान निर्मित कर सभ्यता के विकास के साथ विकसित एवं परिवर्तित होती रहती है। मनुष्य ने अपनी अभिव्यक्ति को प्रत्येक युगातीत से आधुनिक युग तक विभिन्न माध्यमों के द्वारा आध्यात्मिक, कलात्मक एवं सौन्दर्यात्मक स्वरूपों में अभिव्यक्त किया है। भारतवर्ष अपनी शास्त्रीय कला के साथ–साथ अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक लोक कला के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

भारत देश के प्रत्येक प्रान्त में विविध रूपों में लोक कला दृष्टव्य होती है, जो वहाँ की लोक संस्कृति की परिचायक है। जैसे– महाराष्ट्र की रंगोली, बिहार की मधुबनी, उदयपुर की पिछवाई व मोलेला मूर्तिशिल्प आदि लोक कलाऐं उस प्रान्त की संस्कृति को प्रदर्शित करती है। यही कलाएँ लोक के साथ–साथ शास्त्रीय रूप में भी देखी जा सकती हैं, जिनमें भारत के विभिन्न प्रान्तों में बने उनके लोक कला पर आधारित मूर्तिशिल्प है। इनका निर्माण धर्म से प्रभावित होकर किया गया। आधुनिक समय में यह मूर्तिशिल्प प्राचीन परम्पराओं व संस्कृतियों के संरक्षण हेतु भी प्रयुक्त किये जा रहें हैं।

लोक कलाओं का जन्म मनुष्य की भावनाओं और उनकी परम्पराओं पर आधारित है, क्योंकि यह जन सामान्य की अनुभूति की अभिव्यक्ति है। यह शास्त्रीय तथा व्यावसायिक कला की पृष्ठभूमि भी है। लोक कला किसी भी क्षेत्र या स्थान का लोक सांस्कृतिक परम्पराओं का दर्पण होता है। लोक कला परम्परा की विशेषता है कि यह लोक संस्कृति का अभिन्न अंग होकर पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती रहती है।

प्रारम्भिक वनवासी मानव ने प्रकृति के विभिन्न तत्वों में सौन्दर्य की अधिष्ठात्री देवी को अमूर्त में देखा था। अपने प्रयासों द्वारा उसे मूर्त रूप प्रदान करने का प्रयास किया। मनुष्य ने अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के विकास एवं अपनी कलात्मक प्रतिभा को बौद्धिकता के साथ विकसित करके गीली मृत्तिका को अपनी अभिव्यक्ति का साधन बनाकर मृण्मय कला के रूप में साकार किया तथा इन्हीं मृण्मय मूर्तियों ने धार्मिक रूप प्राप्त कर लोक कलाओं को भी विकसित किया।

'टेराकोटा' शब्द का शाब्दिक अर्थ ''पकी हुई मिट्टी'' से है। हमारे देश में लगभग प्रत्येक गाँव में कम से कम एक कुम्भकार परिवार अवश्य होता है। इन कुम्भकारों का जीवन स्तर व इनकी उत्पादन क्षमता अलग–अलग होती है। इनके द्वारा तैयार किये गये उत्पादों को ''मिट्टी के बर्तनों'' के नाम से जाना जाता है जो स्थानीय तौर पर उपलब्ध लचीली मिट्टी से बनाये जाते हैं। इस लचीली मृत्तिका से निर्मित पात्र तथा मूर्तिशिल्पों को सर्वप्रथम धूप में सुखाया जाता है तत्पश्चात् भट्टियों में 750˙-800˙c के तापमान पर पकाया जाता है। पकाने के उपरान्त यह मृण पात्र तथा मूर्तिशिल्प लाल भूरे रंग में परिवर्तित हो जाते हैं जो टेराकोटा (मृण्मय) के नाम से जाने जाते हैं, जिसकी प्रकृति अत्यधिक कठोर एवं टिकाऊ होती है। टेराकोटा (मृण्मय) अर्थात् पकी हुई मृत्तिका से निर्मित यह पात्र तथा मूर्तिशिल्प मानव की रचनात्मकता के साथ–साथ सौन्दर्यात्मक पूर्ति में भी सहायक होतें हैं।

भारत एक बहु आयामी संस्कृति का देश है तथा इसकी छवी हमें यहाँ की लोक मूर्तिशिल्पों में प्रदर्शित होती है। वर्तमान समय में भारत में ऐसे बहुत से संग्रहालय हैं, जहाँ इन लोक मूर्तिशिल्पों का संरक्षण किया जाता है, इन्हीं में से एक है नई दिल्ली स्थित 'संस्कृति केन्द्र संग्रहालय'। इसकी स्थापना सन् 1979 में श्री ओ.पी. जैन की अध्यक्षता में हुई थी। इस संग्रहालय में हमें भारत के विभिन्न राज्यों की लोक कला से सम्बन्धित मृण्मय मूर्तिशिल्पों का संग्रह देखने को मिलता है। अतः संग्रहालय में संग्रहित इन लोक मृण्मय मूर्तिशिल्पों से प्रभावित होकर मैनें अपने शोध का विषय ''लोक मृण्मय मूर्तिशिल्पों का कलात्मक अध्ययन (संदर्भ : संस्कृति केन्द्र संग्रहालय, नई दिल्ली)'' को शोध विषय के रूप में चयन किया। इस शोध विषय के अन्तर्गत मैं इस संग्रहालय में संग्रहित मृण्मय मूर्तिशिल्पों का अध्ययन करने का प्रयास करूँगी।

lEcfU/kr lkfgR; dk iqukoyksdu

कला जगत की साहित्यिक धरोहर शोध कार्य के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन में शोधार्थियों हेतु मार्ग प्रशस्त करती है। शोध कार्य से सम्बन्धित विषय का पुनरावलोकन शोध विषय के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, भौगोलिक एवं कलात्मक स्वरूप की व्याख्या करता है, जिसका शोध कार्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

मैंने अपने शोध विषय के चयन हेतु विभिन्न संग्रहालयों का भ्रमण किया। संग्रहालयों में संग्रहीत प्राचीन धरोहरों के माध्यम से मुझे मृण्मय कला के विषय में संदर्भ प्राप्त हुआ। यह मृण्मय मूर्तिशिल्प मुझे अत्यन्त रोचक लगे। इस विषय पर गहन अध्ययन करने के लिए मैंने पुस्तकालयों व संग्रहालयों का भ्रमण एवं पुस्तकों का गहन अध्ययन करने के पश्चात् इस विषय को शोध कार्य हेतु चयनित किया।

संस्कृति केन्द्र संग्रहालय, नई दिल्ली के भ्रमण के दौरान संग्रहालय के प्रमुख कार्यवाहक johUn nÙk से मुझे इस संग्रहालय में संग्रहीत मृण्मय मूर्तिशिल्पों की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विषय में ज्ञान प्राप्त हुआ। इस विषय पर अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए मैंने नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट–नई दिल्ली, राष्ट्रीय संग्रहालय–नई दिल्ली में भ्रमण एवं पुस्तकों का गहन अध्ययन किया।

संस्कृति केन्द्र संग्रहालय में संग्रहीत लोक मृण्मय मूर्तिशिल्प अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभावी हैं। संस्कृति केन्द्र संग्रहालय में संग्रहीत मृण्मय मूर्तिशिल्पों में भारतीय लोक परम्परा की भाँति देवी–देवता, मानवाकृति, पशु आकृति तथा संयुक्त मूर्तिशिल्प दर्शनीय है। मैंने संस्कृति केन्द्र संग्रहालय, नई दिल्ली के अन्तर्गत lLÑfr ifr"Bku द्वारा प्रकाशित पत्रिका ^^lLÑfr^^ ¼2005½ का गहन अध्ययन किया। इस पत्रिका द्वारा मुझे संग्रहालय का सांस्कृतिक एवं कलात्मक परिवेश के विषय में ज्ञान प्राप्त हुआ। लेखक ';ke 'kek द्वारा लिखित पुस्तक ''ikphu Hkkjrh; dyk] okLrqdyk ,o efrZdyk** द्वारा मुझे मृण्मय मूर्तिकला की ऐतिहासिकता एवं उसकी प्राचीनता के विषय में ज्ञान प्राप्त हुआ। लेखक egkohj vxzoky द्वारा रचित पुस्तक ''ykd lLÑfr % vk;ke ,o ifjik{k**द्वारा मुझे भारत की प्राचीन संस्कृति व लोक कलाओं के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त हुआ। लेखक V.Ganapati Sthapati द्वारा लिखित ''Indian Sculpture and Iconography- Form and Measurment" द्वारा मुझे मृण्मय मूर्तिशिल्पों के निर्माण व उसकी बनावट से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त हुआ। लेखक Shanti Lal Nagar द्वारा लिखित पुस्तक ''Deities in Terracotta Art (From Earliest times to Late Medieval Period)'' द्वारा मुझे मृण्मय में निर्मित देवी–देवताओं की प्रतिमाओं के विषय में जानकारी प्राप्त हुई। लेखक C. Sivaramamurti द्वारा लिखित "Memories of the Archaelogical Survey of India" द्वारा मुझे विभिन्न प्रान्तों में बने लोक मृण्मय मर्तिशिल्पों का ज्ञान प्राप्त हुआ।

ifjdYiuk

परिकल्पना शोध कार्य हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसमें प्रत्येक शोध कार्य की सफलता व उसकी वैधता का परिक्षण किया जाता है, एवं इसके लिए पूर्व ज्ञापित ज्ञान के आधार का होना अति आवश्यक है।

भारतीय मृण्मय मूर्तिशिल्प की परम्परा ऐतिहासिक एवं प्राचीन है। इस भारतीय प्राचीन परम्परा का उत्कृष्ट उदाहरण हमें सिन्धु सभ्यता से प्राप्त मृण्मय पात्र व मूर्तिशिल्पों में दृष्टव्य है। तत्पश्चात् भारत के प्रत्येक प्रान्त में यह लोक कला में समन्वित देवी–देवताओं के मूर्तिशिल्पों में भी परिलक्षित होतें हैं। वर्तमान समय में भारत के प्रमुख लोक मूर्तिशिल्पों का एक साथ समन्वित संरक्षण हमें नई दिल्ली स्थित संस्कृति केन्द्र संग्रहालय में दृष्टिगोचर होता है। इस संग्रहालय में संग्रहित मृण्मय मूर्तिशिल्व भारत के विविध प्रान्तों की सांस्कृतिक, धार्मिक परम्परा व प्रचलित लोक कला के अद्भुत समन्वय को प्रदर्शित करतें हैं। इस सन्दर्भ में, मैं भारतीय मूर्तिशिल्प की अतुलनीय प्राचीन परम्परा के अन्तर्गत संस्कृति केन्द्र संग्रहालय में संग्रहित मृण्मय मूर्तिशिल्पों के कलात्मक पक्ष के अध्ययन के माध्यम से इसके महत्वपूर्ण योगदान को प्रस्तुत करूँगी।

mÌs';

शोध कार्य के विषय ''लोक मृण्मय मूर्तिशिल्पों का कलात्मक अध्ययन (सन्दर्भ–संस्कृति केन्द्र संग्रहालय, नई दिल्ली)'' के वर्णात्मक अध्ययन हेतु उद्देश्य इस प्रकार हैं :–

- आदि कालीन भारतीय मृण्मय मूर्तिशिल्प परम्परा का संक्षिप्त परिचय देते हुए संस्कृति केन्द्र संग्रहालय में संग्रहित मृण्मय मूर्तिशिल्पों का ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य तथा मृण्मय मूर्तिशिल्पों का उद्भव एवंविकास का अध्ययन।
- संग्रहालय में संग्रहित मृण्मय मूर्तिशिल्पों के प्रमुख स्त्रोतों में विषयवस्तु, माध्यम एवं तकनीक में विभिन्नता एवं एकता दोनों को ही सूक्ष्म विवेचना के आधार पर अध्ययन।

- संस्कृति केन्द्र संग्रहालय में संग्रहित मृण्मय मूर्तिशिल्पों में, समाज की तत्कालीन परम्परा एवं लोक कला शैलियों के वैविध्यपूर्ण अद्वितीय समन्वय का अध्ययन।
- संग्रहालय में संग्रहित मृण्मय मूर्तिशिल्पों के आध्यात्मिक, कलात्मक एवं सौन्दर्यात्मक स्वरूपों की विवेचना का विस्तृत अध्ययन।

pj

मेरे शोध कार्य के आधार सूत्र निम्नलिखित है :–

- संस्कृति केन्द्र संग्रहालय, नई दिल्ली में संग्रहित मृण्मय मूर्तिशिल्पों का स्थानीय भ्रमण।
- संग्रहालय के अध्यक्ष।
- विभिन्न कला संग्रहालय एवं पुस्तकालय।
- कला समीक्षक।
- भारतीय पुरातत्व विभाग दिल्ली से साक्षात्कार।
- इण्टरनेट वेबसाइट्स।

dk;l i.kkyh

vu|l/kku vfHkdYi %&इस शोध कार्य का अध्ययन संस्कृति केन्द्र संग्रहालय में संग्रहित मृण्मय मूर्तिशिल्पों के वर्णात्मक अनुसंधान पर आधारित रहेगा।

inÙk ldyu %&प्रदत्तों का एकत्रीकरण प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित रहेगा।

ikFkfed L=kr&संस्कृति केन्द्र संग्रहालय का भ्रमण, मृण्मय मूर्तिशिल्प एवं संग्रहालय के अध्यक्ष से साक्षात्कार प्रमुख हैं।

f}rh;d L=kr&पुस्तकें, प्रकाशित पत्र, पत्रिकाऐं, समाचार पत्र, कैटलॉग, वेबसाइट्स एवं विभिन्न संग्रहालयों एवं पुस्तकालयों का भ्रमण आदि।

&मेरी सम्मानीय निर्देशिका के साथ विषय पर वार्तालाप।

i`frn'k vkdkj ¼&मैंने शोध कार्य हेतु 150–200 प्रतिदर्शों का चयन किया है।

lk{kkRdkj ¼&संग्रहालय के अध्यक्ष, प्रबन्धकों एवं उपप्रबन्धकों, कला प्रमियों, समीक्षकों एवं पुरातत्व संग्रहालयों के अध्यक्षों सेसाक्षात्कार किया जायेगा।

i`nÙkksa dk ,d=hdj.k dh i`fof/k ¼&प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रविधि अवलोकन पर आधारित रहेगी।

lhek,¡ ¼&प्रत्येक शोध कार्य एक समय सीमा पर आधारित होता है। मैं अपने शोध कार्य को समयावधि में एकत्रित प्रदत्तों के आधार पर पूर्ण करने का प्रयास करूँगी। शोध कार्य कला समीक्षकों के साक्षात्कार, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, अवलोकन व संग्रहालय आदि पर आधारित होगा।

vk/kqfud ;qx esa i`klafxdrk ¼&संग्रहालयों में संग्रहीत कला धरोहरों से हमें तत्कालीन घटित प्रत्येक ऐतिहासिक, भौगोलिक, धार्मिक, सांस्कृतिक प्रतिक्रियाओं का सन्दर्भ मिलता है। इसीप्रकार नई दिल्ली स्थित संस्कृति केन्द्र संग्रहालय में हमें भारत की लोक सांस्कृतिक मृण्मय मूर्तिशिल्पों का संग्रह दृष्टिगोचर होता है। आधुनिक परिवेश में भारतीय कला एवं संस्कृति का विशेष महत्व है। अतः आधुनिक कला परम्परा में संस्कृति केन्द्र संग्रहालय में संग्रहीत मृण्मय मूर्तिशिल्पों के योगदान के साथ ही कलात्मक पक्ष को प्रदर्शित किया जायेगा।

fo"k; vuqØef.kdk

Hkkfedk % लोक मृण्मय मूर्तिशिल्पों का संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय एवं महत्व

i`Fke v/;k; % संग्रहालय का भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिचय

f}rh; v/;k; %&संग्रहालय में संग्रहीत कलाकृतियाँ

2-1 मृण्मय मूर्तिशिल्प

2-2 अन्य कलात्मक कलाकृतियाँ

r`rh; v/;k; %&संग्रहालय में संग्रहीत भारत के विभिन्न प्रान्तों के उपलब्ध मृण्मय मूर्तिशिल्पों का तुलनात्मक अध्ययन

3-1 राजस्थान

3-2 उत्तर&प्रदेश

3-3 बिहार

3-4 गुजरात

3-5 पश्चिम बंगाल

3-6 मध्य–प्रदेश

3-7 छत्तीसगढ़

3-8 उड़ीसा

3-9 तमिलनाडु

prFk v/;k; %&संग्रहालय में संग्रहीत मृण्मय मूर्तिशिल्पों में कला तत्व व सौन्दर्यानुभूति

4-1 कला तत्वों के आधार पर शैलीगत विशेषताएँ

Ikpe v/;k; %&संग्रहालय में संग्रहीत मृण्मय मूर्तिशिल्पों की तकनीक व कलाकारों का परिचय

mil gkj

ifjf'k"V %&संदर्भ ग्रन्थ सूची

Bibliography

पत्र–पत्रिकाएँ

कैटलॉग

इण्टरनेट वेबसाइट्स

चित्र सूची

मानचित्र

vuq l/kku vfHkdYi

Hkfedk के अन्तर्गत भारतीय मृण्मय मूर्तिि”ल्प परम्परा का उद्भव एवं विकास का संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय एवं महत्व को प्रस्तुत किया जायेगा।

iFke v/;k; के अन्तर्गत संस्कृति केन्द्र संग्रहालय, नई दिल्ली के भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिदृ”य के साथ इसमें संग्रहीत लोक कला शैली पर आधारित मृण्मय मूर्तिि”ल्प परम्परा का अध्ययन करुँगी।

f}rh; v/;k; को दो खण्डों में विभक्त किया गया है, जिसके अन्तर्गत संग्रहालय में संग्रहीत मृण्मय मूर्तिशिल्पों व अन्य कलात्मक कलाकृतियों का अध्ययन किया जायेगा।

r`rh; v/;k; के अन्तर्गत संस्कृति केन्द्र संग्रहालय, नई दिल्ली में संग्रहीत भारत के विभिन्न प्रान्तों के उपलब्ध मृण्मय लोक मूर्ति”ाल्पों का तुलनात्मक अध्ययन करुँगी।

pr|Fk v/;k; के अन्तर्गत संग्रहालय में संग्रहीत मृण्मय मूर्ति”ाल्पों का कला तत्वों के आधार पर शैलीगत विशेषताओं को प्रस्तुत करुँगी।

i|pe v/;k; के अन्तर्गत संग्रहालय में संग्रहीत मृण्मय मूर्ति”ाल्पों तकनीक, कलाकारों के परिचय पर प्रका”ा डालने का प्रयत्न करूँगी।

l|nHk x|UFk l|ph

- श्रीवास्तव, के. सी. : 2015, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति,यूनाइटेड बुकडिपो, इलाहाबाद
- गर्ग, प्रेमप्रका”ा : 1956, मिट्टी व कुट्टी का काम, विद्या भवनसोसाइटी, राजस्थान
- बोस, हीरेन्द्रनाथ : 1958, मृत्तिका उद्योग, प्रका”ान शाखा, सूचनाविभाग, उत्तर प्रदे”ा
- गोस्वामी, प्रेमचन्द : 1997, भारतीय कला के विविध स्वरूप, पंच”ाीलप्रका”ान, जयपुर
- गुप्ता, नीलिमा : 2010, भारतीय लोक कला, स्वाति पब्लिके”ान्स,दिल्ली

- जयसिंह, नीरज : 1989, राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
- चौधरी, डी.पी. : 1964, मूर्तिकला का इतिहास, एस.एम. अग्रसरअली कादरी रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा

Bibliography

- Agrawal, V.S. : 1996, Terracotta Art in Northern India, Surendra Kumar Srivastava Parimal and Publication, Delhi
- Banerji, Arundhati : 1993, Images, Attributes &Motifs- Studies In Early Indian Art and Numismatics, Sundeep Prakashan, Delhi
- Pal, Pratapaditya : 1986, Indian Sculpture, Los Angeles, California
- Prasad, Agam : 1993, Terracottas of North India, Agam Kala Prakashan, Delhi
- Biswas, S.S. : 1981, Terracotta Art of Begal, Agam KalaPrakashan, Delhi
- Kala, S.C. : 1980, Terracottas= Terracotta in the Allahabad Museum, Abhinav Publication, New Delhi

Munniswarar by M. Rengasamy and his team, Medium- Terracotta

Manasa chali, Punchmura, Best Bengal

Ayyanar and his two consort, Tamil Nadu, Medium- Terracotta

Molela Art by Dinesh Molela, Medium- Terracotta

Man with Camera and Birds by Ashokan Poduval, Medium- Terracotta, 1992

Ayyanar horses by Clare Twomey, Medium- Terracotta